RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदंः पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

# ❋ मनुष्य बनो ❋


| वर्ष ३० | चैत्र सं० २०३६ वि०<br>मार्च, १६८० | संख्या ६ |
|---|---|---|


## शब्द

लेखक—दुर्गादास 'चमन'

सार शब्द है सब से न्यारा, पाँच शब्द में है विस्तारा ।
शब्द वरुण और शब्द ही धुन, शब्द निर्गुण और शब्द ही गुण है ।
शब्द की महिमा सबने गाई, अशब्द गति विरले ने पाई ।
शब्द ही जड़ और शब्द है चेतक, शब्द ही तन और शब्द ही मन ।
शब्द हुक्म और शब्द संसारा, शब्द का है सारा विस्तारा ।
शब्द स्थूल सुक्ष्म और कारण, शब्द मोक्ष और शब्द ही मारन ।
शब्द योग और शब्द नाम है, शब्द गार्ड और शब्द राम है ।
शब्द हंस और शब्द ओंकार, शब्द अल्ला और शब्द निरंकार ।
शब्द ब्रह्म और पार ब्रह्म है, शब्द गुरू और शब्द अहं है ।
अहं भाव में शब्द ने मारा, है फिरता षट चक्रों द्वारा ।
सुषमन मार्ग शब्द वही है, रेचक, कुम्भक, पूरक भी है ।
शब्द नाम और शब्द अनामी, शब्द अजान और अन्तर्यामी ।
शब्द की महिमा कैसे गाऊं, हुक्म समझ कर मन समझाऊं ।
'चमन' शब्द ने साज है साजा ।
'शब्द योग' योगों का राजा ॥

# वैसाखी सतसंग

१३, १४, अप्रैल १९८०

वैसाखी का सतसंग हर बर्ष होता है। इस वर्ष भी होगा। मैं अपने आप से पूछता हूं कि तुमने यह स्यापा क्यों गले डाला हुआ है? मजबूरी। यह संसार जिस में हम रहते हैं यह सारे का सारा ही स्यापा है। मेरा भाग्य! मौज मालिक! उस अपने आद घर की तलाश के सिलसिले में १९०५ ई० में एक दृश्य द्वारा दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले आई। वहां से मुझे यह राधास्वामी मत या संतमत मिला। इस में सब से अधिक बल शुद्ध आचरण, गुरु की महिमा और अनहद मार्ग पर दिया गया है।

मैं ९४ वर्ष का हूं। मेरी सारी आयु इस तलाश में गुजर गई। हिन्दुओं ने कुछ कहा, वेदान्त ने कुछ कहा, मुसलमान, ईसाई और निरंकारी आदि जितने मत और मतान्त्र हैं सब में मतभेद केवल शब्दों का है। यह केवल सन्तमत में ही अनहद मार्ग नहीं बल्कि उपनिषदों के ऋषियों का भी यही मार्ग है मगर सत कबीर साहिब जो आद सन्त माने जाते हैं वह सतगुरु किसको मानते हैं? उनकी बानी है।

सन्तों सो सतगुरु मोहे भावे,
जो आवागवन मिटावे।
डोलत डिगे न बोलत बिसरे
अस उपदेश दृढ़ावे।
बिन श्रम, हठ, किरया से न्यारा
सहज समाध लगावे।
द्वार न रोके पवन न रोके
न अनहद उरझावे।

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा आजकल सब जगह गुरुमत का जोर है। सब सन्त मत वाले अपने चेलों को कोई न कोई नाम देते रहते हैं मगर कबीर साहिब का शब्द कहता है कि सतगुरु वह पूर्ण हस्ती है

जो इन्सान को अनहद शब्द में भी न फँसावे। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ क्या उन्होंने सच लिखा है? मेरे निज जीवन का अनुभव मुझे सिद्ध करता है कि उन्होंने ठीक कहा है। इसलिये मैं इस वैसाखी पर अपने ९४ साल के जीवन का अनुभव जो अनहद से भी परे की अवस्था है वह बताऊँगा। जो सज्जन परमार्थ, सच्चाई और हकीकत की चाह रखते हैं केवल वही पधारें यह कोई मेला नहीं है। ठहरने और भोजन का प्रबन्ध मानवता मन्दिर का ट्रस्ट करेगा। आने वाले सज्जन अपना बिस्तर साथ लायें।

दाता से प्रार्थना है कि यह मेरी अन्तिम वैसाखी हो। गुरु ऋण सिर पर था उतारना चाहता हूं।

फकीर

# कर्म सुधार

## एक शब्द संकेत ने सर्वनाश कर दिया

जिब्हा को बुरी बात कहने से, मन को बुरी बात सोचने से और हाथों को बुरे कर्म्म करने से रोक रखो। कौन जाने किस समय क्या हो जाये! और अनजान में तुम्हारे किसी कर्म से किसी निर्दोष मनुष्य को हानि पहुंचे!' यह भगवान बुद्ध की शिक्षा है। सामाजिक व्यवहार में इससे उत्तम और क्या शिक्षा हो सकती है? यह कभी न समझो कि विचार कोई वस्तु नहीं है। सच तो यों है कि विचार-स्थल ही का नाम संसार है। इसमें बहुत बड़ी शक्ति छुपी हुई है। यह भूल कर भी न सोचो कि वचन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता विचार के दूसरे रूप का नाम वचन है और वह सृष्टि कर्म्म के उलट फेर की शक्ति रखता है। यह न विश्वास करो कि कर्म साधारण ...

किन्तु यों सोचो कि यह जगत कर्म्ममय है। जो कुछ होता है, होगा या हुआ है वह कर्म्म ही के प्रभाव से हुआ है। कर्म में महान शक्ति है। यह विचार का तीसरा रूप है। इस कर्म के आधार और सहायक विचार और वचन हैं। मन, वचन और कर्म तीनों को वश में रखो तब आत्मज्ञान के उपलब्धि की इच्छा करो। यदि वह वश में नहीं है तो फिर सबसे पहले तुम आप ही भ्रष्ट होगे फिर और किसी का बिगाड़ कर सकोगे। जो दूसरों की बुराई सोचता है उसका मन विषसंयुक्त विचारों का स्रोत है क्योंकि यदि ऐसा न होता तो उसमें से अपने पराये को हानि पहूंचाने वाली मानसिक धार कैसे निकलती ? मनुष्य बुरा होगा तब ही बुराई सोचेगा। जो दूसरों की निन्दा और बुराई करता है उसके मन में बुराई जड़ पकड़ गई है और उसके निकास की सच्ची राह उसकी जिव्हा बन गई है। यदि मन और जिव्हा का बुरा न होता तो उसके मुंह से बुरे वचन कैसे निकलते ! जो दूसरों के साथ बुराई करता है वह मन, वचन और कर्म से बुरा है तभी तो औरों को हानि पहुंचाता रहता है। जो जैसा है और जिसने जैसा अपने आपको बना लिया हैं वह वैसा ही करेगा। यह मानी और जानी हुई बात है जिसके सिद्ध करने के लिये किसी युक्ति या प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

इसलिए यदि बुराई से बचना चाहते हो तो पहले कर्म की फिर वचन की और फिर मन की सँभाल करो। जितना ही तुमको इस पर अधिकार मिलता जायगा उतना ही तुम सिद्धि शक्ति वाले वनोगे। शक्ति, मन, वचन और कर्म के चंचल बनाने में नहीं किन्तु उनके रोक रखने में है।

तीर तुपक से जो लड़े, सो तो वीर न होय।
माया तज भक्ती करे, वीर कहावै सोय॥

मन पर यदि एक बार भी तुमको अधिकार मिल जाये तो फिर वह मन सब कुछ और सबको वश में कर लेगा और यदि यह डावांडोल होकर बुराई की ओर झुक गया तो समझ लो कि लोक और परलोक में से किसी के भी योग्य न रहे। मन की अबलता में मृत्यु और मन की सबलता में जीवन है। मन को आधीन कर लेने में आत्म बल और मन के बेलगाम छोड़ देने में

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

सारी बुराइयों की जड़ है। किसी को हानि न पहुँचाने में तुम्हारा अपना ही भला है। भलाई करोगे भलाई मिलेगी, बुराई करोगे बुराई मिलेगी। बुराई से बचो। भलाई की ओर चलो। बचने और चलने के मध्य में मन वचन और कर्म के वश में लाने का प्रश्न पहले ही आता है क्योंकि यह मानी हुई और समझी हुई बात है कि जो मन को वश में नहीं रख सकता वह कभी भी अच्छा नहीं हो सकता।

यदि तुम्हारे सन्देह जनक बचन से किसी को हानि पहुंचने की सम्भावना है तो अपनी जिव्हा को रोक रखो! कोई बात संकेत में, हँसी हँसी में और यों भी मुँह से न निकलने पाये नहीं तो उसके प्रभाव से आग लग जायेगी और निर्दोष मनुष्य भी उसकी जलन और तपन से झुलस जायेंगे और मर जायेंगे। यदि तुमने अपने मन को एक दम भ्रम के बसने की जगह नहीं बना ली है तो सम्भव है कि अन्त में तुमको अपनी बात के लिए पछताना भी न पड़े।

(कर्म सुधार से)

—*—

# प्रवचन

## हुजूर परमदयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर दि० ३-१२-७८

चेत चेत चेत अभी, चेत मेरे भाई॥
राह से कुराह भया, भूला भरमाना।
कहाँ बसे कहाँ बसे, ठौर न ठिकाना॥
संगी नाहिं साथी नाहिं, कोई न सहाई।
ताक में हैं चोर डाकू, कोई न सहाई॥
सोया सो पूँजी खोया, पूँजी खोय रोया।

फल पाया आप बुरा, जैसा बीज बोया ॥
यह तो नहीं तेरा देश, देश है बिगाना ।
यहाँ सब बेगाने बसें, कोई न बेगाना ॥
गुरु ने उपदेश दिया, और मुझे चिताया ।
सन्त पन्थ धार हिये, कटे मोह माया ॥
लूट पड़ी लूट ले, बचा ले धन अपना ।
सह न काल कर्म चोट, सोध ले मन अपना ।
राधास्वामी सन्त रूप, तेरे हैं सहाई ।
उनकी ओर ध्यान लगा, ले चरन शरनाई ॥

राधास्वामी ! मैं अपने आपको ही सतसंग कराता हूँ आप लोगों को नहीं कराता । यह तो कर्म का चक्कर है । इस शब्द में आया है ।

वह तो नहीं तेरा देश, देश है विगाना ।
यहाँ सब बेगाने बसे, कोई न बेगाना ॥

यह तो मुझे विश्वास हो गया और आपको भी होना चाहिए कि यह देश हमारा नहीं है । कोई सौ, कोई अस्सी ओर कोई बीस साल के लिए आया है । आखिर हमारा देश कौनसा है ? मैं उसे ढूढ़ता २ सारा जीवन भर गया । मैंने मान लिया कि यह देश मेरा नहीं है । तुम भी जानते हो । अगर जबरदस्त मानो तो और बात है । मगर एक दिन आयेगा जब तुम यहाँ से चले जाओगे । यहाँ नहीं रह सकते । न सन्त, न अवतार, न पीर न पैगम्बर और न रसूल रहे । क्या कोई रहा ? कोई न रहा ? हम जो आये हैं सबको चले जाना है । बड़े २ ऋषि महात्मा, गुरु और गुरू नानकदेव चले गये । मैं सारी आयु यह ढूढ़ता रहा कि भई ! यह तो ठीक है कि यह देश हमारा नहीं है मगर वह जो असली देश है । क्या वह देश है और वहाँ क्या है ? मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जाऊँगा ? यह प्रश्न मेरे दिल में सदा आता है । अब बुढ़ापा है तिरानबे साल की आयु हो गई है । किसी समय चलना है तो मुझे सोचना चाहिए । गुरु बनकर जो मत्थे टिकबाता हूं इसने

मुझे पार नहीं करना न मन्दिर ने पार करना है । मैं अपनी आत्मा से यह प्रश्न करता हूँ आपको नहीं कहना चाहता । मैंने क्योंकि प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा । इसलिए यह सतसंग का सिलसिला शुरू किया है । मैं अपना कर्म भोगता हूँ तुम पर कोई एहसान नहीं करता । मैं उस देश की तलाश के लिए निकला था । दाता फरमाते हैं—

यह तो नहीं तेरा देस, देस है बिगाना ।
यहाँ सब बेगानें बसें, कोई न बेगाना ॥
गुरू ने मुझे उपदेश दिया और मुझे चिताया ।
सन्त पन्थ धार हिये, कटे मोह माया ॥

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीरचन्द ! मर जायेगा । चार दिन का जीवन है । तू बता कि क्या तूने अपनी मोह माया काट ली ? हर समय तो नहीं कट सकती मगर काट सकता हूँ और वह किसी की बदौलत ? आप लोगों की बदौलत अर्थात आप लोगों की दया से काट सकता हूं । मोह और माया क्या है । जब तक पहले माया का रूप समझ में नहीं आता किसी का भी मोह नहीं कट सकता, लाख कोई यत्न करे जब तक वह माया से नहीं निकलेगा या माया के रूप को नहीं समझेगा । माया क्या है ? दाता लिखा करते थे कि म का अर्थ मापना और य का अर्थ यंत्र नेत्र है अर्थात जिस चीज से कोई चीज मापी जाती है वह हमारी बुद्धि है । मुझे बुद्धि किसने दी ? एक तो संसार की बुद्धि है कि संसार में कैसे जीना है । यह और वह कैसे करना है । जो असली बुद्धि थी वह मुझे किसने दी ? तुम लोगों ने दी । जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप लोगों की सहायता करता है लेकिन मैं नहीं होता वे मुझे अपने विश्वास से पैदा कर लेते हैं मैं तो जाता नहीं तो मुझे अक्ल आ गई कि मेरे अन्तर जो कुछ फुरता है, जो कुछ भी सोचता हूं, यह माया है । है नहीं । जिस प्रकार मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है, मैं तो वहां होता नहीं । वहाँ कौन होता है ? वहां उनकी अपनी ही माया, अक्ल, श्रद्धा और अपना ही विश्वास होता हैं । जब मुझे यह पता लगा तो अब मैं अपना देश ढूढ़ता हूं कि मेरा देश कौन सा है । यह जितना देश है सब माया

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

का है । यही सन्त कहते हैं, माया देश, काल और दयाल देश । सन्त मत या राधास्वामी मत में तीन देश हैं । कोई छाया कह देते हैं । छाया काल और दयाल ऐसे ऐसे शब्द पढ़े हुए हैं ।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ फकीरचन्द ! मर जाना है बता तुझे वह देश मिल गया ? यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूं । जब से मुझे यह पता लगा कि मैं लोगों के अन्तर नहीं जाता । उनका विश्वास और माया काम करती है तो जब मैं अपने देश की तलाश करने जाता हूँ तो मेरे मन के अन्तर से जितने संकल्प उठते हैं उन्हें छोड़ जाता हूँ । मैंने प्रण किया था कि अपने जीवन का अनुभव कह जाऊँगा । यद्यपि मैं जानता हूँ कि जो कुछ मेरे अन्तर फुरना फुरती है यह माया है । मगर मेरे अन्तर अब भी फुरती है मैं जानता भी हूं मगर फिर भी कभी-२ मन में अनेक प्रकार के विचार पैदा होते हैं । कभी-कभी जाग्रत और स्वप्न और समाधि में अभ्यास में जाने के समय नाना प्रकार की शक्लें होती हैं । मुझे पता नहीं कि इन सन्तों के अन्तर शक्लें पैदा होती हैं या कि नहीं, मैं नहीं जानता मगर मेरे अन्तर पैदा होती हैं । मैं जानता भी हूँ कि यह कुछ नहीं मगर किसी समय उससे निकलना मुझे भी कठिन हो जाता है और वह तंग करता है । किसी समय अच्छी और किसी समय बुरी शक्ल आती है । जब तक मैं उस स्थान से ऊपर नहीं जाता तब तक वे शकलें मेरे सामने आती रहती हैं । इस वास्ते ये योग के दर्जे सहसदल-कँवल, त्रिकुटी सुन्न, महासुन्न, भँवर गुफा रखे गये हैं । जो आदमी यहाँ तक रहेगा उसके संस्कार जो पहले पड़े हुये हैं वे उसे अवश्यमेव नाना प्रकार की शकलें, विचारों और बातों में आयेंगे । कोई नहीं रोक सकता जो इच्छा है करे इस वास्ते मैंने सन्तों का आध्यात्मिकता या नामदान का ढंग छोड़ दिया क्योंकि उससे कोई लाभ नहीं । जीव सच्चाई को ग्रहण नहीं कर सकता ।

यह दिल्ली से आया हुआ आदमी बैठा हुआ है । यह कहता है कि मेरे मन के अन्तर नाना प्रकार के विचार उठते हैं और मुझे परेशान करते हैं । उसे यह कष्ट है यद्यपि यह बड़ा अभ्यासी है । यह कहता है कि मैं बहुत

सुमिरन करता हूं और बहुत शब्द सुनता हूँ मगर फिर भी विचारों से बेचेन हूँ, ऐसा क्यों होता है ? कई बार मुझे भी तंग करते हैं यद्यपि मैं जानता हूँ कि ये विचार हस्ती नहीं रखते मगर आते हैं। जो कुछ तुमने जीवन में सोचा हुआ या काम किया हुआ है वे संस्कार तुम्हारे मस्तिष्क पर पड़े हुये हैं। उन्हें तुम कहाँ ले जाओगे। वे कहीं नहीं जा सकते। कई आदमी जब बूढ़े हो जाते है तो उनके शरीर कमजोर हो जाते हैं। जो पिछली बातें हैं वे सब कहते रहते हैं। उनका मस्तिष्क ठीक नहीं रहता। मेरी अपनी क्या दशा हो मुझे क्या पता। मैं नहीं जानता। अब बुढ़ापा आ रहा है मेरी भी ऐसी दशा होती है। यद्यपि जिस समय ऐसी दशा होती है मैं जानता हूं कि यह कुछ नहीं। उन्हें मैं छोड़ना चाहता हूँ मगर अब भी मेरे सामने वे शक्लें आती रहती हैं। फिर कब जाती हैं ? जब अपने देश का ध्यान करता हूं कि मैं यहाँ का रहने वाला नहीं हूं और यह मेरा देश नहीं है यह तो माया का देश है। जब तक मैं इस माया के देश में रहुंगा, यह सब कुछ होगा। मेरे कर्मों और संस्कारों अनुसार अवश्य होगा। कोई महात्मा सच्चाई वर्णन नहीं करता। इन महात्माओं के अपने साथ क्या होता होगा मुझे पता नहीं। मैं नहीं जानता। अब मैं अभ्यास में गया था, कम से कम पाँच सात मिनट इस मन के साथ लड़ता रहा। जब प्रारम्भ में मैं समाधि में गया हूँ तो वे शक्लें मेरे सामने आती थीं। कभी कुछ, कभी कुछ और कभी कुछ। यद्यपि मैं जानता था कि यह माया और छाया है, है नहीं मगर वे शक्लें मेरे सामने से नहीं जाती थीं। यह मेरे साथ आज प्रातः हुआ। जब मुझे विचार आया कि भई ! यह तो माया का देश है यहाँ तो यही रहेगा फिर मैं अपनी सुरत को हटाकर ऊपर ले गया। कहाँ ले गया ? जो माया से परे है उसे अकाल पुरुष, प्रकाश या शब्द कह लो। शब्द भी कई प्रकार के हैं। इसलिए जब तक कोई सार शब्द में नहीं जायेगा, दूसरे ही शब्द सुनता रहेगा उसकी

यही दशा होती रहेगी।

सार शब्द के बिना काम नहीं चलेगा। सार शब्द कब पैदा होगा ? जब हम माया से परे चले जायेंगे और काल से परे चले जायेंगे तब जो शब्द पैदा होगा उसे सार शब्द कहते हैं। क्योंकि आप लोगों ने मुझ पर दया की, पहली दया तो दातादयाल जी का है। अगर वह मुझे यह काम न देते तो पता नहीं मेरा क्या परिणाम होता। मैं नहीं जानता। उन्होंने यह काम दिया था क्योंकि मैं इस भेद को जानना चाहता था कि सन्तों के पास क्या हक है कि जो उन्होंने सब धर्मों, सूफीवाद वेदान्त, जैन, मुसलमान ईसाई सबका खण्डन किया। ये क्या बताते हैं और कहाँ पहुंचाते हैं ? आज्ञा थी कि गुरु की सेवा करो। मैंने सच्चे दिल से गुरु की सेवा की। तुम लोग तो माँगने के लिए आते हो लेकिन हम देने के लिये जाते थे। अगर माँगते थे तो यह कि हमें अपने घर का पता लग जाये। तो उन्होंने १९ ८ में यह काम दिया था और कहा था कि तुझे उस घर में पहुंचाने वाला गुरु सतसंगियों के रूप में मिलेगा। वह मिल गया। मुझे कौन गुरु मिला ? क्या आदेश मिला ? यह मिला कि यह तेरा देश नहीं है, तेरा देश माया से परे है। तब मैं इसे छोड़ जाता हूँ। मगर छोड़ना कोई आसान काम नहीं है। मैं आपको सच्ची बातें बताता हूँ। झूठ नहीं कहता। मुझे पंथ में आये हुये सत्तर-पचत्तर साल हो गये। मैं इतना अभ्यासी और बूढ़ा होता हुआ भी मन के चक्कर में आ-जाता हूँ अर्थात कभी कभी यह मन मुझे भी तंग करता हैं यद्यपि मैं जानता हूँ कि जो कुछ मेरे सामने प्रकट होता है यह सब माया है मगर वे शक्लें और विचार नहीं जाते। शायद आप लोगों के चले गये हों मुझे पता नहीं। मेरे किसी समय नहीं जाते और किसी समय अपने आप ही चले जाते है। यह नहीं कि मुझे गन्दे विचार आते हैं बल्कि नाना प्रकार की शक्लें मेरे सामने आती हैं। आज मैंने आपको अपने अभ्यास का हाल बताया कि मुझे

इस मन के साथ जूझते हुये दस मिनट लगे। ये शक्लें क्यों पैदा होती हैं ? यह एक प्रश्न है जिसको मैं हल (Solve) नहीं कर सकता जितना मैं हल (solve) कर सकता हूं वह यह है कि जिस प्रकार फोटोग्राफर फोटा लेते हैं। कैमरे के सामने शीशा होता है। उस शीशे के कारण फोटो आ जाती है इसी प्रकार कोई शक्लें देखने से हमारे चित्रकाश पर सारी फोटो आ जाती है। उसके निशान रहते हैं। जब मानव वहाँ जाता है तो वे शक्लें, जो संस्कार पहले पड़े हुये होते हैं वे थोड़े बहुत हमारे सामने आते हैं। मेरे तो आते हैं। आप लोगों का मुझे पता नहीं। मैं जानता भी हूँ कि ये कुछ नहीं मगर उनसे निकलना कठिन है। कब निकलेगा ? जब यह मन के परे चला जायेगा। यही दाता ने मुझे लिखा था। मुझे मन के परे किसने ले जाने के लिए विवश किया ? आप लोगों ने। कि वह जो किसी के अन्तर प्रकट होता है वे वही फोटो हैं प्रकाश हैं। तभी तो कहा है ध्यानी भूले। राधास्वामी दयाल की वाणी है।

भक्त उपासक योगी ज्ञानी इन सब चक्कर खाया।

क्यों ? क्योंकि वे मन के चक्कर से बाहर नहीं गये। अब मैं अपनी आत्मा से कोशिश करता रहता हूँ कि मैं अपने घर चला जाऊँ। पहला प्रश्न तो यह है कि क्यों फकीरचन्द ! धर्म से बता कि तू ने वह घर देखा है जहाँ से तू आया है ? दातादयाल का शब्द है—

यह तो नहीं तेरा देश, देश है बेगाना।
कहाँ बसे कहाँ नसे ठौर न ठिकाना॥

अच्छा भई ! अगर यह देश नहीं है तो वह देश कौन सा है ? पता नहीं जो देश मैंने समझा है यही सन्तों का है या कि नहीं। मैं नहीं जानता। मुझे तो इस वर्तमान सन्तमत से उदासी आ गई है पता नहीं कि मैं गलत हूँ या ठीक हूं। इन संतों ने जितना धोखा फरेब, चार सौ बीस हम गृहस्थियों के साथ किया है शायद किसी ने नहीं किया है। मैं बड़ी निर्भयता से कहता हूं। क्यों ? इनका रूप

लोगों के अन्तर प्रकट होता है और ये लोगों को सत्य नहीं बताते कि हम नहीं थे। जिसका परिणाम यह निकला कि हम टेकी और पक्ष-पाती हो गये और एक ही पंथ वाले एक दूसरे से मिलते तक नहीं हैं। यह क्यों है ? क्योंकि हमें सचाई नहीं बताई गई। जब तक तुम इस माया देश में हो तुम या कोई संत अगर यह चाहें कि इन शक्लों के चक्कर से, दुखों सुखों या आनन्द चिन्ता से बच जाऊँ, मेरी समझ में कोई नहीं बच सकता जब तक अपने आपको इस मोह माया से हटा न लें जिस प्रकार दाता ने मुझे कहा —

संत पंथ धार हिये, कटे मोह माया।

जब तक किसी की मोह माया नही कटती और वह माया का रूप नहीं पहचानता उस आदमी के अन्तर दृश्य दिखाई देते रहते हैं यह आदमी रोता है और यह कहता है कि मैं दुखी और परेशान हूँ क्योंकि यह उन दृश्यों को सच्चा मानता है। मेरे अन्तर भी आते हैं लेकिन मैं उन्हें सच्चा नहीं मानता हूँ इसलिए मेरे दुख का कारण नहीं बनते। मैं इन्हें सच्चा क्यों नहीं मानता, यह किसकी दया है ? दया तो दातादयाल की है मगर आप सतसंगियों की दया है। जबसे मुझे यह पता लगा कि मेरा देश कौन सा है तब से मैं ऊपर चला जाता हूँ। मन को छोड़ जाता हूं। आगे प्रकाश और शब्द है। फिर मेरा देश कौन सा हुआ ? जहाँ से मैं आया हूँ या तुम आये हो ? हम प्रकाश और शब्द के देश से आये हैं। केवल प्रकाश और शब्द केवल जिसमें माया अर्थात संकल्प, इच्छा, वासना न हो। अगर वे संत होते तो मैं उससे पूछता कि तुम लोगों ने यह लिख लिखकर हमें पागल क्यों बनाया ? मैं सारा जीवन समझ न सका। वाणियों में लिखा हुआ है कि वहां जाकर सत पुरुष के दर्शन होते हैं। मैं इन सन्तों से पूछना चाहता हूँ कि तुम बताओ तुमने सतपुरुष को देखा ? मैं समझता हूं कि केवल प्रकाश और शब्द के मण्डल में रहना, किसी प्रकार का विचार, संसार का भाव न रहना, शरीर और मन को

भूले रहना उस अवस्था में जो प्रकाश और शब्द की अवस्था में उसे सतलोक समझता हूं। एक तो मेरे अन्तर है और एक बाहर है रूप आदि तो माया देश है लेकिन दयाल देश क्या है ? संतों के मार्ग में उसे गुनवान उठना कहते हैं अर्थात नाना प्रकार के विचारों के पैदा होगा और वे तब तक होंगे जब तक हमारा इष्ट ऊपर नहीं है।

हमारा देश कौन सा हुआ ? प्रकाश और शब्द। मगर मैं तो प्रकाश और शब्द को भी अपना देश नहीं गिनता और न ही वह कबीर साहिब और स्वामी जी ने गिना। मगर सर्व साधारण इतनी ऊँची बात को नहीं समझ सकते हैं इसलिए उन्होंने सतलोक और शब्द और प्रकाश को अन्तिम अवस्था ठहरा दिया अर्थात प्रकाश और शब्द को अपना देश गिना। मैं उसमें रहता हूँ और अनुभव करता हूँ मगर हर समय अर्थात चौबीस घन्टे में वहाँ नहीं ठहर सकता। यह मेरा देश है। हम यहाँ से आये हैं और अगर तुम प्रकट रूप में यूँ देखो तो तुम आप सोचोगे कि हमारा देश प्रकाश है या कि नहीं। हम मां के पेट से बाहर निकले हैं। हम माँ के पेट में कहाँ से आये थे ? हम बाप के वीर्य का एक कीड़ा थे जो आँखों से दिखाई न देता था बल्कि खुर्दबीन से देखा जा सकता था। हम तुम सब नहीं हैं। तुम अपनी आद को देखो, हम सब किसी समय इस अवस्था में थे। जो अवस्था कीड़े की थी वे हम थे। वह कीड़ा कैसे बना ? जो बाप ने खुराक खाई उससे रक्त बना, रक्त से ओजस बना, ओजस से वीर्य बना यह कीड़ा वीर्य में पैदा हुआ जिस प्रकार बाहर गन्दे पानी में कीड़े पैदा होते हैं। वीर्य में कीड़ा पैदा हुआ, कीड़ा रक्त से पैदा हुआ और रक्त खुराक से बना जो माँ बाप या हमने खाई। जब तक सूर्य, चन्द्र और सितारों की किरणें न हों उस समय तक खुराक में बाहर से कोई चीज नहीं आ सकती। इस बुद्धि और समझ से हमारा आद प्रकाश है।

यह तो नहीं तेरा देश देश है बेगाना।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मैं उस देश को ढूड़ता था। उस देश का मुझे पता लग गया मगर अफ-सोस कि मैं वहाँ नहीं ठहर सकता। मैं संसार में जीवित नहीं रहना चाहता। मैंने सब संसार देख लिया मगर क्या मेरे वश में है ? जब मैं अभ्यास करने बैठता हूँ तो मैं सोचता हूं कि मैं मर रहा हूं और सबको भूले जा रहा हूं मगर फिर आ जाता हूँ। जब मैं ऐसी दशा देखता हूँ तो फिर मैं helpless विवश हो जाता हूँ और आशारहित हो जाता हूं। सन्त के हाथ में क्या है और सन्त बन गये तो क्या हो गया ? हम लोगों ने तुम्हें सन्त बनकर लूटा है। सन्तमत की शिक्षा किसी ने नहीं दी। रौचक और भयानक बातें बता २ कर हमें अपने जाल में फँसाया हुआ है। सब गुरुओं, कहीं अवतारों पीर पैगम्बरों देवी देवताओं, कोई मुहम्मद, देवी चिन्तपूर्णी और कोई दूसरे सिद्ध के जाल में फँसे हुये हैं और ये पंथ हमें लूट रहे हैं। मैंने यह समझा। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। यह दातादयाल का उस समय का शब्द है ? जब मैं दो अढ़ाई हजार रुपया खर्च करके आरती करने गया था। मैं अढ़ाई महीने वहाँ रहा तो पहले दिन जो शब्द उन्होंने लिखा था वह यह है—

चेत चेत चेत अभी, चेत मेरे भाई।
राह से कुराह भया, भूला भरमाना।
कहाँ बसे कहाँ नसे, ठौर न ठिकाना।

अर्थात जो मैंने कहा है उसे Condemn कर रहे हैं। दिवानो ! अगर रुपया देने चाँदी और सोने के वर्तन बनाने से कोई तर जाता तो संसार तर जाता। यह मन का जज्वा है जो इन्सान को आनन्द और खुशी देता है। यहाँ तक तो मैं ठीक हूँ मगर इसके सिवाय अगर कोई यह कहे कि आरतियाँ करने, रुपया देने, किसी के मन्दिर में कमरे बना देने से तुम अपने देश चले जाओगे तो यह बिल्कुल गलत, झूठ धोखा और फरेब है ये सारे काम इस संसार के लिए हैं क्योंकि यह माया देश का खेल है। इससे आत्मिकता का कोई सम्बन्ध नहीं। हाँ ! पुन्य अवश्य है।

संगी नाहिं साथी नाहिं, कोई न सहाई।
सोया सो पूँजी खोया, पूँजी खोय रोया ॥

वह मुझे कहते हैं कि भई ! तू चेत । मैं तो दस बारह हजार का सामान लेकर वहाँ आरती करने गया तो वह मुझे पहले शब्द में कहते हैं कि तू चेत। तू राह से कुराह पड़ गया है। कुराह क्या हुआ ? माया और मोह में फँसना ही कुराह है। किसी ने पुत्र के साथ मोह किया, किसी ने गुरु के साथ मोह किया, किसी ने स्त्री के साथ मोह किया। मोह तो मोह ही है मैं निर्भय होकर कहता हूँ कि एक सन्त को चोला छूटने पर कई स्त्रियों ने आत्मघात कर ली। उनकी मौत का जिम्मेदार कौन है ? वह सन्त या उनका पंथ। क्योंकि उन्होंने गुरु के रूप को नहीं बताया। इसलिए उन्होंने बाहरी गुरु के रूप को ही गुरु समझा और जब वह गुरु मर गये तो आप भी नदी में छलाँग लगा दी। ये गुरु लोग अपने सिर पर इतना बोझ ले गये हैं जिसका कोई हिसाब नहीं। जो कुछ मैंने समझा है बिल्कुल सच्ची बात कहता हूं। दाता दयाल ने लिखने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मगर मुझे समझ नहीं आता था उन्होंने इस प्रकार नहीं समझाया जैसे मैं समझता हूं। शब्द तो उन्होंने लिख दिया कि भई ! तू कुराह पड़ गया है।

सोया सो पूँजी खोया, पूँजी खोये रोया।
फल पाया आप बुरा जैसा बीज बोया ॥

वह क्या चीज है जो हमसे लूटी जाती है ? हमारी अपनी सुरत को सब लूटते हैं। स्त्री अपनी ओर खींचती है, लड़का अपनी ओर खींचता है, गुरु अपनी ओर, कांँगरस अपनी ओर और जनता अपनी ओर खींचती है। वह क्या चीज है ? वह हमारा अपना ही निज रूप है। हम अज्ञानी हैं इसलिये यह नहीं समझते कि असली चीज क्या है, दूसरों के पीछे लगे हुये हैं जो आदमी सारी आयु बाबा फकीर के पीछे लगा रहेगा वह भी पार नहीं जा सकता। गुरु से ज्ञान लेना चाहिये। गुरू का काम चेतावनी देना है। जो वह कहता है उसे समझो। समझकर अपनी सुरत को अपने आप में ठहराने का यत्न करो।

यह नहीं तेरा देश, देश है बेगाना।
यहाँ सब बेगाने बसें, कोई न बेगाना ॥

सब बेगाने हैं कोई अपना नहीं। हमारा देश यह नहीं है। हम तो सब थोड़े समय के लिये आते हैं। मैं उस देश की तलाश करता हूँ। वह देश क्या है? वह शब्द और प्रकाश का देश है जिसे सतलोक कहा जाता है। हम वहाँ से आये हैं। मैंने आपको हर ढंग से साफ सिद्ध कर दिया कि हम प्रकाश और शब्द से आये हैं और हमने वहाँ जाना है मगर नहीं जा सकते क्योंकि मोह माया है। माया जब कटेगी ज्ञान और समझ से कटेगी। मेरी कैसे कटी केवल इस समझ से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। इस एक विचार ने मेरे जीवन का तख्ता बदल दिया। अगर मुझे यह विचार न मिलता तो चाहे मैं नर्क में जाता मैं दाता दयाल के विरुद्ध राधास्वामी मत, कबीर साहिब के विरुद्ध वह डंका बजाकर जहर उगल जाता कि लोग याद रखते। मैंने अपना जीवन खोया है और तलवार की धार पर चला हूँ केवल यह जानने के लिए कि यह राधास्वामी मत, कबीर मत या सन्त मत जिन्होंने सबका खण्डन किया है। और अपना खुदा अलग अलग बताते हैं। वह इनका खुदा क्या है? हम तो हिन्दू थे। राम कृष्ण और देवी को मानते थे। उन्होंने सबको बुरा भला कहा और नई चीज पैदा कर दी। आप वे डाकू बन गये। किसी ने पब्लिक को साफ नहीं बताया और सन्तमत को सच्चा बताया। अगर सच्ची बात पूछते हो तो संसार को सचाई की आवश्यकता नहीं। मेरे पास जितने आदमी आते हैं सब संसारी इच्छायें लेकर आते। किसी के पुत्र नहीं किसी के यह नहीं किसी के वह नहीं। कोई माई महीने का नाम सुनने के लिए आती है। क्यों आती है? कि मुझे धन मिलता रहे और मैं सुखी रहूं। मैं सच्ची बात बताता हूँ। संसार को भी सच्चाई की आवश्यकता नहीं। अगर सन्तों ने सचाई नहीं बताई तो मैं इतना दोषी उनको नहीं गिनता मगर इसलिए उन्हें दोषी गिनता हूँ कि उन्होंने बात को परदे में रखकर सम्पत्ति इकट्ठी की और गद्दियें अपने पुत्र पोतरों को दे गये। इसलिए मैं कहता हूँ कि वे गलती पर हैं। मेरा अपना कर्म था। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कह जाऊंगा ।

गुरु ने उपदेश दिया और मुझे चिताया ।
संत पंथ धार हिये, कटे मोह माया ॥

मेरी मोह माया कैसी कटी ? जब से मुझे बिश्वास हो गया कि मेरे अन्तर जो भी विचार उठते हैं ये सब के सब माया और कल्पित हैं, मेरी अकल के हैं तो मेरी माया कट गई । मगर अभी तक माया मेरे साथ है । जब तक जीवन है माया कहाँ जायेगी । मगर अब मैं इस माया के काबू में नहीं आता । मैं जानता हूँ कि माया खेल खिलाती है । यह आदमी यही शिकायत लेकर मेरे पास आया है ।

लूट पड़ी लूट से बचाले धन अपना ।
सह न काल कर्म सोध ले मन अपना ॥

वह कहते हैं लूट पड़ी है । क्या लूटते हैं ? हमारी सुरत को लूटते हैं । स्त्री, माँ बाप, बहन भाई, राजा दोस्त यार हमारी सुरत को अपनी ओर खींचते हैं । हम उनके मोह के जाल में फँस जाते हैं । यही लूट है—

राधास्वामी सन्त रूप, तेरे हैं सहाई ।
उनकी ओर ध्यान लगा ले, ले चरन शरनाई ॥

जो असली गुरु है वह आदमी को नहीं लुटता । वह उसको सच्चाई बताकर अपने घर भेजता है । अब मुझे उस देश का पता लग गया । वह प्रकाश भी है और शब्द भी है । मगर वहाँ हर समय नहीं ठहरा जाता । मैं कोशिश अवश्य करता रहता हूं । मैं सन्तमत को सच्चा मान गया । तुम्हारा बेड़ा सार शब्द पार करेगा ।

शब्द शब्द वह अन्तर सार शब्द चित दे ।
जो राड़े साहिब मिले, सोई शब्द गह ले ।
शब्द हमारा आदि का, पल पल करिये याद ।
अन्त फलेगी माँह की, बाहर की बरवाद ॥

उन्होंने सार शब्द बताया है । वह सार शब्द क्या है ? जब प्रकाश और शब्द में जाता हूं तो उस चीज़ की तलाश करता हूं जो मेरे अन्तर प्रकाश में

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है और प्रकाश और शब्द की साक्षी है वहाँ पहुँच जाना ही उस अवस्था में रहना सार शब्द है। शब्द अन्तिम अवस्था नहीं। स्वामी जी की वाणी है--

सुरत शब्द दोऊ अनुभव रूपा।
तू तो पड़ा भरम के कूपा।

अगर तुमने शब्द सुन लिया तो तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। संसार भूला हुआ है। इस वास्ते जब बीन बजने लगे और प्रकाश हो जाय तो पूरे गुरु की तलाश करने की हिदायत है। वह जो सार शब्द की अवस्था है। इसे कबीर साहिब की वाणी में पाँचवा पद कहते हैं। पाँचवें पद की साखी में केवल चार लाइनें हैं। सार शब्द क्या हुआ ? अनुभव ! अब उस अनुभव का वर्णन करना बड़ी कठिन बात है। मेरी समझ में आ गया मगर अभी तक वहां ठहरा नहीं जाता। मैं चाहता भी हूं और कभी ठहरता भी हूं। क्यों नहीं ठहरा जाता ? इसका मुझे पता नहीं। जहाँ तक मैंने समझा है यह अपनी कोशिश से नहीं होता। जिस पर मालिक की दया होती है वह यह अनुभव पाता है और जिसका समय आया हुआ होता है वह इस ओर आता है। हरएक आदमी न आता है और न आ सकता है।

कबीर साहिब ने कहा है कि वह सार शब्द है और विदेह है अर्थात उस का शरीर नहीं है। जिस चीज की आवाज की लय है वह विदेह नहीं है। क्योंकि यह अनुभव का विषय है इसे शब्दों में वर्णन करना बड़ा कठिन है Supermost Consciousness जो हस्ती है उसकी Vibrations सार शब्द है।

अभ्यास करने से पहले मन साफ होना चाहिए। अगर मन गन्दा है अवगुण हैं और महसूस करते हैं कि हम में ये कमियें हैं ये दूर हो जायें तो यह सोचकर अभ्यास करो कि ये अवगुण दूर हो जायें जब तक ऐसा नहीं करोगे तो जो कुछ मन्द मन्द तुमने सोचा हुआ है जैसी जिसकी वासना है वे शक्लें बनाकर तुम्हारे सामने आयेंगी इसलिए अपनी नीयत को साफ रखो। बस ! मैंने एक ही धर्म समझा है। अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी से हेरा

फेरी, धोखा फरेब या चार सौ बीस मत करो।

मैंने अपने जीवन में [illegible] समझा कि मैं कौन हूँ ? मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। उस प्रकृति का किसी को भेद नहीं मिला।

सबको राधास्वामी !

—०—

# धन्यवाद

१०) श्री अमरचन्द भाटिया अमृतसर, ५१) श्री एच० एल० अग्रवाल नई दिल्ली, ११) श्री नन्दलाल सौल भोपाल, १०) एच० आर० जोशी जालन्धर, ११) दामदत्त गोड़ बरेली एवं २१) श्री एन० एम० दुग्गल, अलीगढ़ से मनुष्य बनो की सहायतार्थ प्राप्त हुए हैं।

मालिक से कामना है कि सभी भाइयों को सुख वैभव से परिपूर्ण रखे एवं दीर्घायु करे साथ जीवन पर्यन्त उनके सद विचार बनाये रक्खे।

—प्रकाशक

# गुरू है आदि अनादि

गुरू अजर अमर अविनाशी है। वह न मरता है न जन्मता है। अज्ञानियों को सही मार्ग बतलाने के लिए वह मानवी चोले में प्रकट हुआ करता है।

कलयुग में स्वामी दया विचारी, प्रगट करके शब्द पुकारी।<br>
जीव काज स्वामी जग में आये, भवसागर से पार लगाये।<br>
तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा, सत्तनाम सतगुरु गति चीन्हा।

# नकल पत्र

## परम दयाल जी महाराज जो कि श्री एम. जी. सिंह भोपाल निवासी को पत्र का उत्तर में लिखा।

होशियारपुर ११-३-८०

प्यारे भाई ! राधास्वामी।

मैं सच्ची बात कहूँ ९४ साल में जो कुछ मैंने तहकीकात मैंने की उसका निचोड़ ये है कि मुझको क्या मिला ? जो कुछ मिला उसे ब्यान करने से लाभ नहीं मिलते फिर भी लिखता हूं कि बहम और भ्रम चले गये बहम तो आप समझते ही हैं कि चीज कुछ होती है व आदमी समझता कुछ है। भ्रम क्या है ? लोग आम यह समझते हैं कि रस्सी को साँप समझना भ्रम है मगर मैं यह समझता हूँ भ्रम के भाव हैं मनका अनेक फिसादों, विचारों में उलझकर सुलझने की सीधा करना भ्रम है। जब से मुझे ये यकीन हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्तर जिनको मैं जानता भी नहीं उनमें प्रगट होकर अनेक बातें बताता है और सत्तर पचत्तर परसेन्ट पूरी होती हैं मगर मुझे मालूम न होता न मैं कुछ करता हूँ तो मुझे यकीन हो गया कि जितने विचार ख्याल शक्लें अन्तर में पैदा होती हैं सभी मन का खेल है। मन में अगर पवित्रता है सचाई है तो अन्दर से जो जवाब मिलता है सत्य होता है वह जवाब चाहे राम देवी देवता या किसी इष्ट या गुरू के रूप से मिले। यह सब मन ही है आदमी का इस अनुभव से सभी विचार जो अनामय, मनमय, विज्ञानमय, प्राणमय और आनन्दमय कोषों को साधन के साथ छोड़ जाता हूं। जितने शब्द और प्रकाश में साधन के समय छोड़ जाता हूँ जितने शब्द सुनता प्रकाश देखता, घन्टा, शंख मृदंग, मुरली, बीन आदि सुनता था इनसे मुझे मनानंद या आत्मानन्द मिलता था। इस ख्याल से कि मैं कहीं नहीं जाता मैं उस चीज की तलाश करता हूँ जो मेरे अन्दर शब्द प्रकाश या अन्य दृश्यों को देखती है इस अवस्था में अधिक साधन नहीं रह सकता वहाँ तो चिराग गुल पगड़ी गायब। दूसरे शब्दों में खामोसी आ जाती है न मैं की न तू की खबर होती है इस हालत

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

में पहुँचा हुआ मनुष्य क्या कुछ कर सकता है मैं तो कर नहीं सकता। बातें कितनी बना दूँ, किताबें कितनी ही लिख दूँ लेक्चर चाहे कितने ही दे दूँ। मैंने समझा कि एक ताकत है जिसे कोई परम तत्व, कोई अकाल पुरुष और कोई अनामी या कोई राधास्वामी कहता है। सब कुछ जो हो रहा है उसी ताकत के मातहत है। वो ही ताकत नीचे आकर सुरत आत्मा मन और शरीर के भाव बन जाती है। अनुभव ज्ञान के ख्याल से आप या मैं बेशक कुछ बन जाएँ मगर मेरा अनुभव कहता है कि बावजूद इन तमाम ध्यान व योग प्रकाश आदि के क्या मैं अपने कर्मानुसार काम क्रोध लोभ अहंकार से बरी हो गया हूँ ? नहीं ये प्रारब्ध का खेल है या मालिक की इच्छा। इसलिये मैं अब सिर्फ शरणगत किसकी ? जो आदि व अन्त में रहने वाली एक ताकत है उसे ही ज्ञान सतगुरु अनुभव मानता हूँ। ज्ञान अज्ञान, धर्म, कर्म, भक्ति व मुक्ति, योग व युक्ति ये सभी मन का खेल है। जब तक जीवन है खेल खेलने को विवश हैं।

मैं आपका मान करता हूँ जो आपने लिखा ठीक है। मैं किताबों को नहीं मानता। सब मजहब पंथ व गुरुओं के रोचक व भयानक बातें कहकर अपने पंथ व गुरुओं ने खुद की बढ़ाई करवाई है तो भी ठीक है यह भी ठीक है। उसकी मौज है। मुझे शाँति शरणागति में मिली। अभ्यास विवेक, विज्ञान आनन्द जरूर मैंने पाया मगर सब अब छोड़ा सिर्फ शरणागति है।

आपका फकीर

×—×

# प्रवचन

## परमसन्त परमदयाल पंडित फकीरचन्दजी महाराज
## मानवता मन्दिर होशियारपुर

जनम तेरा धोखे में बीता जाय :

माटी के गोंद हंस बनिजारा, घड़िगे पंछी बोलनहारा।
चार पहर धंधा में बीता, रैन गँवाय सुख सोवत खार।
जस अंजुल जल छीजत देखा, तैसे झरिगे तरवर पात।
भौ सागर में केहि गुहर बौ, ऐंठी जीभ जम और लात।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, फिर पछितै हों मल मल हाथ।

राधास्वामी।

मैं अपने आप से प्रश्न करता हूँ क्यों भई ! तू लोगों को सलाह देता है, सत्संग कराता है, मत्थे टिकवाता है, पैसे लेता है यद्यपि अपने लिए नहीं मगर लेता तो है। क्या मेरा धोखा चला गया ? क्या तूने जीवन में कुछ किया ? वह क्या धोखा था जिसमें मैं फँसा हुआ था ? जिस प्रकार मैं ठाकरों को परमात्मा समझ कर प्रेम से अपने मन से पूजता था लेकिन ठाकुरों को पूजना एक धोखा था क्योंकि ठाकुर परमेश्वर नहीं थे। फिर राम और कृष्ण का ध्यान करने लगा। सिद्ध हुआ कि वह जो मैं अपने मन के प्रेम से राम और कृष्ण का ध्यान करता था वह भी धोखा था। वहां से छोड़ कर दाता दयाल के पास आया ! दाता दयाल का ध्यान बांधा। पहले तो दस साल तक तसबुर रूप ही नहीं बँधा क्योंकि मेरा पहला ध्यान राम या कृष्ण पर बँधा हुआ था। उसे तोड़ कर नया ध्यान बाँधना तनिक कठिन काम था। दूसरे छोटी आयु में विवाह होने के कारण अधिक कामी रहा जिससे मन चंचल था। दाता से मैंने इतना प्रेम किया जिसकी कोई हद नही। मगर जब मैं जाता और अकेला होता तो वह कहते कि तू अभी काल और माया से नहीं निकला। मैं चकित था। जब मैं १९३१ में ताज लेकर गया, वह सायं-

काल शौच गये। मैं भी लोटा उठाकर पीछे पीछे चला गया। शोच आदि से निवृत होकर वहाँ एक तालाब पर हाथ मुँह पांव धोये और एक पत्थर पर बैठ गये। वह शकल इस समय मेरे सामने आती है। मैं उन्हें इस प्रकार देखता रहा जिस प्रकार पतंगा दिये शमाँ को देखता है और वह मेरी ओर देखते रहे। उन्होंने ठन्डी साँस भरी और कहा फकीर! तू एक विचार में बह गया, मेरी आज्ञा मानता चल, काल माया से निकल जायेगा। ये शब्द थे, मुझे याद आते हैं। उन्होंने मेरे इस धोखे को दूर करने के लिए यह सत्संग का काम दिया था। इससे मुझे पता लगा कि मैं जो दाता दयाल का रूप बनाता और वह हर तरह से मेरी सहायता करते मगर जिसे मैं दाता दयाल महर्षिजी के रूप में याद करता था, वह भी मेरी भूल और धोखा था मैं गुरू को याद नहीं करता था मगर धोखे में था—

जनम तेरो धोखे में बीता जाये।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ क्योंकि फकीरचन्द! तू ने अपना जनम धोखे से बचा लिया? जब मुझे सिद्ध हुआ कि मेरे अन्तर जो कुछ भी फुरना फुरती है यह कल्पित और माया है तो फिर मैं दाता दयाल के ध्यान को भी छोड़ जाता हूं। फिर असली चीज क्या हुई? आगे प्रकाश और शब्द है जिसे मैं देखता और सुनता हूं मगर मुझे वह प्रकाश भी धोखा दिखाई देता है। क्यों? क्योंकि प्रकाश को देखने और को सुनने वाला कोई और है। वह 'मैं' और मेरी जात है। उसका पता नहीं लगता कि वह क्या है? मैं यहाँ तक पहुंचा हूँ। पता नहीं कि मैं धोखे से निकल गया हूँ या मैं अभी धोखे में हूँ। यह मुझे पता नहीं।

सब शास्त्र भी ब्रह्म को मानते हैं। मैं भी कहता हूं कि प्रकाश को देखो और नूर को पकड़ो मगर नूर (अपने आप) एक धोखा है। मगर जब तक तुम यहाँ से नहीं गुजरोगे तुम्हें यह धोखा मालूम नहीं होगा। इस वास्ते अन्तमत में कहा गया है कि गुरु की तलाश करो और इसीलिए मैं कहता हूं कि मैं अनामी धाम से समय के सन्त सतगुरु के रूप में केवल इस धोखे को दूर करने के लिए आया हूँ। क्योंकि हम सब धोखे में हैं: किसी का लड़का

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

मर गया वह रोता है। उससे पूछो कि तू लड़का कहां से लाया था? उसने धोखे से ही उसे अपना पुत्र समझा, धोखे या भूल से ही अपनी सम्पत्ति समझी और फिर दुख सुख उठाता है। दाता दयाल का शब्द है।

नूर नूर सब कोई कहत हैं

घट में नूर प्रकाशिया, बरस गया चहुँ ओर।
जगमग जगमग हो रहा, बढ़ा नूर का जोर।
नूर नूर सब कोई कहे, नूर न जाने कोय।
गुरु गम परख का ज्ञान जो, नूर कहावे सोय।
आदि अन्त यह नूर है, छाय रहा भरपूर।
जो न लखे इस नूर को, तिस आँखन में धूर।
घट में प्रेम प्रगट भया, शंस निकले नैन।
धोगये छिन में शंख दोऊ, जब लख नूर का सैन।
राधास्वामी रूप में, दरस नूर का पाप।
तिमिद मिटा अज्ञान का, सतगुरु भये सहाय।

एक आदमी नूर काही साधन करता है। क्या नूर का साधन करने वाला पतित नहीं होता? बिश्वामित्र कितना तपस्वी था, मैंनका ने उसे छल लिया। असली नूर ज्ञान और अनुभव है। मैं यह क्यों कहता हूं? मैंने बड़ी बड़ी रोशनियाँ देखीं मगर रोशनी देखने के बाद क्या मुझे शान्ति मिल गई? क्या मैं फिर दुखी नहीं हुआ? हुआ। क्या फिर मैं कामी नहीं हुआ? या मुझे क्रोध नहीं आया? यह सब हुआ। हमारा यह अभ्यास केवल मन की चंचलताई को दूर करने के लिए है। जब मन की चंचलताई दूर हो जाती जाती है तो फिर उसके साथ ही सत्गुरु की आवश्यकता पड़ती है जो तुम्हें सच्चा ज्ञान दे दे। अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि जो आदमी केवल अन्तर में प्रकाश देखने वाला है सम्भव है उसमें सिद्धि शक्ति आजाये मगर अगर वह चाहे कि वह नहीं गिरेगा, मैं नहीं मानता क्योंकि मैं गिरा ऋषि और दूसरे कई महात्मा गिरे मगर उन्होंने दूसरे लोगों को नही बताया मुझे सच्चा ज्ञान क्या मिला? मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तूने

अपना जनम बना लिया और धोखे से बच गया ? जिस प्रकार मैं धोखे से बचा मैं वह कहता हूं कि अब मुझे कोई धोखा नहीं। क्यों कि मैं समझ गया कि जो कुछ भी मेरे अन्तर प्रकट होता है ये वाह्य प्रभाव हैं। जब तक मेरा जीवन है ये तो आयेंगे। इन्हें कोई नहीं रोक सकता। जैसे-जैसे संस्कार पड़े हुए हैं, उन संस्कारों में न फँसना और अपनी सुरत को अपनी जात की ओर रखना ही अपना जनम बनाना है —

जनम तेरो धोखे में बीता जाये

मैंने पाखण्ड नहीं बनाया, जो सच्ची बात थी वह बतादी। मेरा जीवन बिलकुल सच्चा है। लोग आकर मुझे तंग करते हैं। मेरे पास क्या रखा है ? मेरे पास सत्य ज्ञान है उसे तो कोई लेता नहीं, जो मैं कहता हूं उसे कोई नहीं पकड़ता। कोई पुत्र और कोई किसी चीज के लिए मेरे पीछे फिरता है—

जनम तेरो धोखे में बीता जाय।

माटी के गौद हंस बनिजारा, घड़िगे पंछी वोलनहारा।
चार पहर धंधा में बीता, रैन गँवाय सुख सोवत खाट।
जस अंजुल जल छीजत देखा, तैसे झरिगे तरवर पात।
भौ सागर में केहि गुहर नौ, ऐंठी जीभ जम मौर लात।

क्या यह ठीक है कि जम लात मारता है ? हाँ ! मारता है। हम समझते हैं कि यम कोई नई चीज है और जब मरने लगते हैं तो कोई यमराज बाहर से आता है। मेरा अनुभव इसके विरुद्ध है। क्यों ? जब लोगों ने कहा कि बाबा ! अमुक मर गया तो हवाई जहाज घोड़ा या पालकी लेकर आया मैं तो नहीं गया, वल्कि जिसके जैसे कर्म होते हैं और उसके बिचार, विश्वास, जो उसके Sub conscience mind में वजनी होते हैं वे मरते समय उसके सामने आते हैं और क्योंकि वह जानता नहीं कि यह धोखा है, उसे वह यमराज समझता है। असल में यम खारज करने को कहते हैं तुम्हारा मन संकल्प विकल्प उठाता और शक्लें बनाता है। वे क्या हैं ?

वे तुम्हारे मन की Sub conscience mind की इच्छायें हैं। जो आदमी मरते समय यह समझता है कि उसे लेने के लिए यमराज, धर्मराज या बाबा फकीर आया वह धोखे में है। क्योंकि यमराज और धर्मराज कोई और चीज नहीं वे तुम्हारे मन की ही हालतें हैं जो सब की बराबर नहीं होतीं बल्कि अलग होती हैं जैसा कि जब कोई मर गया और कुछ समय बाद उसे फिर होश आई और जाग उठा तो हर एक आदमी अपना जुदा जुदा विचार लोगों को प्रकट करता है।

जो कुछ तुम्हारे सामने आता है यह तुम्हारा अपना ही विश्वास, श्रद्धा और व्यवहार है। गन्दे विचार रखने वालों के सामने मरते समय जो कुछ उन्होंने गन्द या पाप किये हुये हैं डरावनी शकलें वनाकर उनके सामने आयेंगे। तुमने किसी से पैसा लिया हुआ है उसे वापिस नहीं किया तुम्हें मरते समय याद आयेगा, ख्याली दण्ड मिलेगा। तुमने किसी से कोई वायदा किया हुआ है उसे पूरा नहीं किया तो तुम्हें दण्ड मिलेगा। जो स्त्रियाँ अपने पतियों को छोड़कर दूसरे पुरुषों के पास जाती हैं उन्हें दण्ड मिलेगा। जो पुरुष अपना कर्तव्य पूरा नहीं करते उन्हें दण्ड मिलेगा। वह दण्ड क्या है? उनका अपना मन है। मैं यह क्यों कहता हूं? मेरी स्त्री को दाँतों में कष्ट और Heart trouble थी। वह खून के अधिक वह जाने से बेहोश होगई। वह कहती थी कि पण्डित पुरुषोत्तमदास उसके अन्तर दिखाई दिया और उसने कहा कि तेरे कष्ट का कारण यह है कि तू ने देवी की सुक्खन सुखी हुई थी अर्थात कोई वायदा किया हुआ था कि तुम्हें यह चढ़ायेंगे उन्नतीस वर्ष व्यतीत होगये तू ने वह पूरा नहीं किया इसलिये तुम्हें दण्ड मिला है। जब उसे बेहोशी आई तो जो उसने वायदा किया हुआ था, वह उसके Sub conscience mind में था और वह उसके सामने आया। मैंने उसे कहा कि तू वायदा पूरा करआ तब वह पूरा करने गई।

यमराज और धर्मराज क्या है? ऐ मानव! तेरे अपने मन के ही कर्म हैं। जो बिचार या बीज तुमने वोये हुए हैं जब तेरा शरीर कमजोर हो जायेगा वही विचार तेरे अन्तर फैलेंगे और वही यमराज है। अगर अच्छे हैं तो बही

... बनो ॥

... वह तुम्हें बता दिया। जब तक ... वह मालिक या हमारा घर मन और ... को पकड़ कर ज्ञान को प्राप्त नहीं करोगे ... बनेगा जो कि माया है तब तक धोखा ही ... में आया वह मैंने आपको बता दिया। मैंने

... मोहनलाल ने प्रश्न किया कि आपने शब्द ... किया। ... जिससे जीव अपने घर जाता है वह सार शब्द ... शब्द विदेह कहा है। हम अशब्द थे। शब्द में फँसे ... का ... है, जिस शब्द का देह नहीं है ... जब आदमी वहाँ चला जाता है तो उस ... और यही स्वामीजी ने कहा है—

... शब्द छोड़ अनुभव क्या
तू तो पड़ा भरम के कूप

... मैंने जीवन में कहा सन्तों ने उसकी पुष्टि की है। आखरी मंजल ... राधास्वामी ख्याल के अनुसार है वहाँ न खालिक है ... राम न रहीम और न स्वामी न सेवक है। आखरी मंजल ... हस्ती को (व्यक्तित्व) Individulity को मिटा देना ... मंजल पर पहुंचने के लिए मार्ग तो था ... नहीं थी इसलिए इसे धोखा कहा गया। सन्तों ने यह ... नहीं बताया कि धोखा क्या है। जब तक जीवन

... और तुझे दाता दया ...
दाता! तेरे चरणों में गया ...
... ने आज्ञा दी वह कर दिया। बाणी निकली थी ... क्यों फकीरचन्द। क्या तू ने अपना जन्म ... बताया और जो मेरी समझ में आया वह मैंने बता ... छोड़ी।

... ईश्वर ... गोद में ... तुम ... तक मन में ...

॥ मनुष्य बनो ॥

# कर्मयोग

# भूत

कोई माने या न माने परन्तु बात स...
अपना प्रभाव डाले बिना नहीं रहती ।...
आती है और सब इसके विषय ...
विचार है इनमें से बहुत कम ...
न हो क्योंकि बहुधा लोगों ...
कहानियाँ इन्कार नहीं ...
भी नहीं कह सक...
न करें । हम...
जब तक...
सम...
काम...
अवश्य सच...

हम सफर मे...
और आप और संसार ...
क्षण क्षण और पल ...
दुख का किनारा है ! कभी ...
कभी निकल कर मैदान की ...
वास्तव में सफर में महा दुख है ...
ठहरा तो फिर क्यों मनुष्य को दुख ...
नया नया पानी पीना प्रत्येक मनु...
रात दिन का चक्कर हो ...
जाते हैं, बाल बच्चे उत्पन्न...



बहुत दिन हुए कि हमको घूमने फिरने का विचार हुआ । संसार के झगड़ों
झमेलों ने अभी तक मनको इतना विषधर नहीं बनाया था । चित्त प्रसन्न
था, मन में जवानी की नई नई उमंगें भरी हुई थीं ! इस अवस्था में देश
भ्रमण की इच्छा बहुत ही प्रबल होती है । हम घूमते फिरते हुए एक नगर में
पहुंचे । यह विचार हुआ कि आओ सफर की थकावट दूर करने के लिए ...
शहर में एक घर किराये पर लें और बिश्राम करने के पीछे फिर सफ...
चलें । प्रकृति का यह एक गुप्त रहस्य है कि एक दशा सदैव नहीं र...
कभी दुख है कभी सुख है ! कभी चिन्ता है, कभी शान्ति है ...
चक्कर से भी यही बात सिद्ध होती है कि यहाँ एक ही द...
भूल और भ्रम है न कभी ऐसा हुआ, न होता है और ...
हम थके मांदे तो थे ही । आलस आई ...
चल कर घर ढूँढे परन्तु संयोगवश एक घ...
का गुप्त रहस्य है । जिसको तुम ढ...
है । दूर जाने की नौबत नहीं कि ...
आवश्यक है । हम यह बा...
है । घूमने फिरने को ... भी है ।
रहती है । ढूंढ सकोगे
साहब कृपन तोला

... जंजीर ॥
विचित्र बातें देखने में
वर्णन ...
करना असम्भव है परन्तु
रहते हैं जो आशा ...

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL



पाव रत्ती, जाँच पड़ताल की हुई है । यदि वह नहीं मिलता तो उसका कारण केवल यह है कि संकल्प दृढ़ नहीं है और अब तक हम उसके लिए उद्यत नहीं है नहीं तो क्या मजाल कि वह न मिले ! घर सजा सजाया था । साधारण बातचीच के पश्चात घर की कुंजी हाथ में ली और उसमें प्रवेश किया । घर क्या था ईश्वर की माया का दृश्य ! कोई उसकी प्रशंसा भी करे तो क्या करे ! ऊपर से नीचे तक हवादार, एक दो खिड़कियाँ नहीं किन्तु करोड़ों ! बड़ी खिड़कियाँ तो गणना में नौ से अधिक नहीं थी परन्तु छोटी खिड़कियों की गिन्ती कौन करे ! यदि किसी ने जयपुर का 'हवाई महल' देखा है तो वह कुछ कुछ अनुमान कर सकता है । परन्तु इसमें और उसमें आकाश पाताल का अन्तर है । नीचे से ऊपर तक सन सन हवा आती थी सीढ़ियां हजारों और सब जंजीरदार ! तुम जिधर चाहो सुगमता से चढ़ सकते हो एक कल को हाथ लगाओ और ऊपर के कमरों में पहुँच गये ! जब नीचे आना चाहो फिर वही सुगमता ! पहिले पहिल तो प्रवेश करते ही कुछ अंधेरा सा दिखाई देने लगा परन्तु भीतर पांव रखते ही उसमें झाड़ फानूस लटकते हुए दिखलाई पड़े । चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश था । हमारे पढ़ने वाले सम्भव है इसको झूठ समझें या जादू ठहरायें परन्तु मैं स्वाभाविक झूठ नहीं बोलता । लोग चाहे हमको झूठा समझलें परन्तु हम सच्ची बात कह रहे हैं । जिनको कभी इस घर में प्रवेश करने का अवसर मिला है और जिन्होंने आँखें खोकर इस घर को देखा है वह हमारी बातों को एक दम सच मानेगे । यदि हम इस घर के सौंदर्य को वर्णन करना चाहें तो सारा जीवन व्यतीत हो जाये परन्तु उसके एक कौने का भी वर्णन पूर्णरूप से न हो सकेगा क्योंकि जो कुछ सृष्टि में है वह घर बनाने वाले ने सब इसमें एकत्रित कर रक्खा है । यह संसार का सर्वोत्तम नमूना था । इसमें बाग बगीचे, नहरें, जंगल और नाना प्रकार के बेल बूटे सुन्दरता के साथ लगे हुए थे । बाहर से देखने पर तो वह साधारण घर से अधिक प्रतीत नहीं होता था परन्तु उसके अन्दर जाते ही ईश्वर की सारी कारीगरी आंखों के सामने आगई । बुद्धि चकित होगई ।

मन में तो आया कि इधर उधर फिर कर इसको सैर करलें फिर विश्राम

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

करें परन्तु कहना सहज और करना महा कठिन था । आपने एक कहावत सुनी होगी, 'भूक न जाने बासी भात, नींद न जाने टूटी खाट । स्वार्थ न माने और की बात, भोगी सोचे अपनी घात ।' नींद लगी हुई थी । शरीर टूट रहा था, आँखें पथरा रही थीं । घर के बीचों बीच एक बड़े और सुसज्जित कमरे में पलंग बिछा हुआ था हमने आव देखा न ताव झट पलंग पर लेट रहे और पाँव फैला दिया । आँखों का बन्द होना था कि तन बदन की सुध जाती रही । ऐसे सोये कि लोक परलोक का ध्यान नहीं रहा । यह दशा कितनी देर तक रही होगी हम नहीं कह सकते । गहिरी नींद में चूर होगये क्योंकि थकावट ने कुछ ऐसा दबोच लिया था कि करवट बदलने तक का ध्यान नहीं आया ।

रात्रि का शेष भाग इसी में व्यतीत होगया । नींद भर सोये परन्तु जैसा कि हमने पहिले कह रक्खा है यहाँ कोई एक अवस्था में नहीं रह सकता । घर में कुछ खटखटाहट की आहट मिली । ऐसा प्रतीत हुआ मानो इस घर में कुछ और लोग भी हैं और वह दबे पाँव चल फिर रहे हैं । नये घर में ऐसे विचार के उत्पन्न होते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं । हम कुछ डर से गये सोचा कि 'कहीं ऐसा न हो कि यहाँ लेने के देने पड़ें और उलटे आपत्ति में फँसे ।' शब्द की भनक कान में आना ही था कि आँख खुल गई और नींद उचट गई । घर प्रकाश से जगमग जगमग हो रहा था । उसमें कमरे बहुत थे परन्तु सब प्रकाशक ! हमने सोचा, 'या ईश्वर ! क्या रहस्य है ? इस घर के मालिक ने इसके भयानक होने के विषय में कुछ नहीं कहा था । हमने पहिले ही कुछ किराया भी दे दिया है और शेष फिर देंगे । उसका धर्म था कि सारी बातें हमको पहिले ही बता देता परन्तु उसने एक बात भी नहीं कही । जब घर इतना सुसज्जित है तो इसमें और किरायेदार भी आते होंगे । यदि भयानक और सन्देहजनक होता तो उजाड़ पड़ा रहता परन्तु इसकी अवस्था कह रही है कि ऐसा नहीं है । फिर हम क्यों डर रहे हैं ? और यह शब्द क्यों सुनाई देते हैं ?' हमने चाहा कि आँखें बन्द करलें परन्तु नींद किसको आती है ! अब वह शब्द और भी जोर से सुनाई देने लगा, सोचा, 'किस बात का ! चलो देखो तो सही क्या बात है ? कम से कम अपना बोध तो कर लेना

॥ मनुष्य बनो ॥

...यदि रात को जीवित बचे तो यह बात बहुत दिनों तक याद रहेगी ...साथियों से कहने का अवसर मिलेगा।

...उठ खड़े हुए और शब्द की ओर चल निकले। पता लगा कि शब्द ...ओर से आरहा है क्योंकि इस घर में कई कोठे थे। हमारे कमरे से ...एक सुनहरे रग की सीढ़ी थी। उस पर चढ़ने का निश्चय किया। ...जीर ऊपर से नीचे तक लटकी हुई थी। उसको हाथ से पकड़ लिया ...जीर के सहारे ऊपर की ओर चढ़े। जंजीर से एक प्रकार का मध्यम ...खड़खड़ाहट का हुआ परन्तु वह इतना अप्रिय नही था। थोड़ी सी भी ...के झोंके से उसमें शब्द प्रकट हो जाता था। हमने सोचा 'यदि घर में ...ोग भी हैं तो वह इससे अवश्य परिचित होंगे और वह इसको सुनकर ...ना न होंगे।' हम इस प्रकार सोच कर ऊपर चढ़े। जब सीढ़ी के सिरे ...पहुँच गये तो ऊपर कई कमरे दिखलाई दिये। यह सब के सब जगमगा ...। इनके भीतर की सारी वस्तुयें बाहिर से दिखलाई देती थी कौन जाने दीवारें बिल्लौर की बनी हुई थीं या शीशों की। हमने इस सिरे से ...रे तक ध्यान पूर्वक देखा। या ईश्वर ! जो दृश्य सामने आया उसे कैसे ...किया जाये। लेखनी भी लिखने से थर थर कांपती है। एक कमरे में ...टा हुआ था। उस पर प्रकाश की किरणें पड़ रही थीं। उसमें स्वय ... की चमक आगई थी। हमने चाहा कि ऊँचे स्वर से हांक लगायें ...र में खून हुआ है परन्तु डर के मारे कुछ बोल न सके। सर चकराने ...लगा। इस पर भी जी यही चाहता था कि 'देखना चाहिये बात क्या है ? कौन मारा गया है ? और किसने खून किया है।' हम आगे ...। द्वार को हाथ लगाया। वह खुल गया। वहां रक्त के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। डर था कि कहीं लुहू हमारे पांव में न लग जाये नहीं तो कल हम आप गवाही में पकड़े जायेंगे और जान बचाना कठिन होगा। इसलिये सँभाल सँभाल कर पांव धरने लगे परन्तु वहां रक्त के अतिरिक्त और कुछ न देखने पर इधर बढ़े जिधर कहीं कहीं रक्त की छीटें पड़ी हुई अपराधी का पता दे रही थीं। जितना ही आगे बढ़े रक्त के छींटे दिखलाई देते गये। अभी कोई ७९-८० गज

गये होंगे कि कई स्त्रियां भागती हुई दिखाई दीं। उनके कपड़ों पर कहीं-कहीं लुहू के धब्बे पड़े हुए थे और एक पुरुष हाथ में भुजाली लिये हुए उनके पीछे पीछे दौड़ा चला जाता था जो इन बेचारियों को दुखी कर रहा थां। जी में तो आया कि हम दौड़ कर उसके हाथ से वह हथियार छीन लें और उसको पकड़ कर बाँधें परन्तु यह काम खेल नहीं था। वह मनुष्य हमसे कई गज की दूरी पर था। हम दूर की वस्तु को कम देखते हैं! भली भाँति उनका रूप दिखाई नहीं देता था। केवल इतना ही देख सकते थे कि एक मनुष्य कई स्त्रियों के पीछे पड़ा हुआ है। वह अपनी प्राण रक्षा के लिये भाग रही हैं और यह उनका पीछा नहीं छोड़ता। वह एक कमरे से दूसरे में, और दूसरे से तीसरे में दौड़ दौड़ कर भाग रहीं थी और यह उनके साथ साथ था। स्त्रियों की राह में एक और सीढ़ी पड़ी। वह झट पट उस पर चढ़ गईं। पुरुष पर खून सवार था। वह पीछा नहीं छोड़ता था। वह सब भाग कर ऊपर की छत पर आगईं और छत के किनारे खड़ी होकर अपना मुँह उस पुरुष की ओर किया। वह भी अपनी जगह पर रुक गया। स्त्रियों ने उससे कहा, हत तेरे हाथों से हमको बचाव नहीं। तू ने हमें घायल कर दिया। देख! ह ...र घाव खाते खाते चलनी होगया है। हम कब तक इस अत्याचार ...न करे? अब यदि तू नहीं मानेगा तो हम इस घर के पीछे धम से कू पड़ेंगी और प्राण त्याग करेंगी। तुमको हत्या का पाप होगा। तू क्यों हमारा पीछा नहीं छोड़ता?' उसने उत्तर दिया, 'मुझको तुम्हारा प्रेम है। बुरा हो या भला! मैं तुमको या तो मार करके चैन लूँगा या अपने वश में लाऊँगा स्त्रियाँ बोलीं, 'तेरा विचार असम्भव है। यह सच हैं कि तू हमको सतायेगा और क्या आश्चर्य हम तेरे हाथ से बच न सकें परन्तु इस बात का निश्चय रख कि हम तेरे हाथ कभी न आयेंगी। प्राण निकलना है तो निकल जायें। कुछ चिन्ता नहीं! परन्तु तू हमको हाथ न लगा सकेगा और अन्त में हमारा तेरा न्याय ईश्वर के सम्मुख होगा।' पुरुष ने कहा कुछ परवाह नहीं! जो कुछ होगा देखा जायेगा। इस समय जो मन में ठनी है अवश्य करूँगा।'

हमने यह सब बातें सुनीं, क्योंकि दृष्टि की अपेक्षा हमारी श्रवण शक्ति